डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/101/2020-22 वर्ष : 08 अंक : 10 मूल्यः 5 रुपए पृष्ठ : 4 R.N.I. No. RAJHIN/2014/56746

शिखर दृष्टि जीवन की...

साप्ताहिक समाचार पत्र

हिलव्यू समाचार

शीर्षक सत्यापन पत्र संख्या

RAJHIN16831/20/01/2013-TC

जयपुर
शनिवार, 28 अगस्त, 2021

hillviewsamachar@gmail.com

जयपुर में नई वैक्सीन का ट्रायल

फ्रांसिसी फार्मा कंपनी की बनाई 'सनोफी' दवा का 500 वॉलंटियर्स पर ट्रायल; 21 दिन बाद दी जाएगी दूसरी डोज

जयपुर। फ्रांस की दिग्गज फार्मा कंपनी 'सनोफी' और ब्रिटेन की फार्मा कंपनी GSK की बनी वैक्सीन के तीसरे फेज का ट्रायल जयपुर के विद्या नगर स्थित एक निजी अस्पताल में चल रहा है। पिछले 2-3 दिन से डोज देने की शुरुआत हुई है। 500 लोगों को पहला डोज लगेगा। 21 दिन बाद दूसरी डोज दिया जाएगा। यह ट्रायल 18 व इससे ज्यादा उम्र के लोगों पर किया जा रहा है। अच्छी बात यह है कि अबकी बार ट्रायल को लेकर कोई भ्रम नहीं है। बड़ी संख्या में लोग इसमें शामिल हो रहे हैं। इस वैक्सीन को 'सनोफी' नाम दिया गया है।

पिछले साल जैसा डर नहीं: क्लीनिकल ट्रायल के प्रिंसिपल इंवेस्टीगेटर (PI) डॉ. मनीष जैन ने बताया कि कंपनी ने 500 लोगों पर ट्रायल करने को कहा है। हर व्यक्ति को 0.5ML की डोज दी जाती है। ट्रायल को लेकर लोगों में जो पिछले साल डर था, वैसा अब देखने को नहीं मिल रहा है। उन्होंने बताया कि इससे पहले जयपुर में जायडस कैडिला कंपनी की बनाई ZyCov-D के दूसरे फेज और भारत बायोटेक की कोवैक्सीन के तीसरे फेज के ट्रायल किए गए थे। वर्तमान में भारत में सीरम इंस्टीट्यूट की कोवीशील्ड, भारत बायोटेक की कोवैक्सीन और रूस की स्पुतनिक-V इस्तेमाल हो रही है। मॉडर्ना और जॉनसन एंड जॉनसन को मंजूरी मिली है, लेकिन अभी ये भारत में उपलब्ध नहीं है।

इसके अलावा कुछ दिन पहले जाइडस कैडिला की जायकोव-डी को DGCI ने इमरजेंसी यूज के लिए अप्रूवल दिया है।

लगातार हो रही मॉनिटरिंग

डॉ. जैन ने बताया कि जिन वॉलंटियर्स को डोज दी जा रही है, उनकी मॉनिटरिंग की जा रही है। टेलीफोन से उनका हालचाल लिया जाता है। हालांकि वॉलंटियर्स को पहले बता दिया है कि हल्का बुखार आना या टीके वाली जगह दर्द की थोड़ी शिकायत रह सकती है। फिर भी कोई दिक्कत होगी, तो उसके लिए हमारी टीम तैयार है। उन्होंने बताया कि जिन लोगों को गुरुवार को डोज लगाई जा रही है, उन्हें 21 दिन बाद दूसरी डोज दी जाएगी।

हो चुके हैं 2 ट्रायल

कंपनी ने अपनी इस वैक्सीन के दो फेज के ट्रायल भारत से बाहर दूसरे देशों में किए हैं। पहले फेज के नतीजे सकारात्मक आए हैं। बताया जा रहा है कि विदेशों में जो ट्रायल हुए, उसमें यह वैक्सीन दक्षिण अफ्रीका वैरियंट पर असरदार साबित हुई है।

पायलट के फील्ड दौरों से गरमाएगी कांग्रेस की सियासत

मिजाज भांपने और समर्थकों में जोश भरने फिर शुरू किए फील्ड के दौरे, अलग-अलग इलाकों के दौरे की तैयारी में जुटे सचिन

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से जारी खींचतान के बीच पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट ने राजधानी छोड़ फील्ड के दौरे करने की रणनीति बनाई है। पायलट ने गहलोत के गृह क्षेत्र से सियासी दौरों की शुरुआत कर दी है। सचिन पायलट की अब लगातार फील्ड में सक्रिय रहकर प्रदेश के अलग अलग इलाकों में दौरे करने की रणनीति है। फील्ड के दौरों के कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया जा रहा है। अब पायलट लगातार दौरे करेंगे। उनके फील्ड दौरों से कांग्रेस की सियासत गरमाएगी।

सचिन पायलट के रणनीतिकारों ने टाइमिंग का भी ध्यान रखा है। रणनीतिकारों ने सियासी महत्व के इलाकों और इवेंट्स को छांटकर उनमें पायलट के लिए दौरे तय ?किए हैं। प्रदेश के हर इलाके में पायलट की पहुंच बनाने की रणनीति पर काम चल रहा है। पायलट अब जल्द नहरी क्षेत्र का दौरा कर सकते हैं।

समर्थकों में जोश भरने और जनता तक रीच बढ़ाने की कवायद: सचिन पायलट के फील्ड दौरों के पीछे समर्थकों में जोश भरने की कवायद है। लंबे समय से कोरोना की लहर की वजह से नेताओं के दौरे बंद थे। फिर से हालात सामान्य हुए हैं, इसलिए पायलट ने दौरों पर निकलने का फैसला किया है। सियासी जानकारों के मुताबिक सचिन पायलट अब जनता के बीच रहने वाले नेता की छवि बनाना चाहते हैं, इसलिए इलाके वार दौरे करने की रणनीति बनाई है। सियासी अहमियत रखने वाले हर इलाके में कार्यक्रमों में जाने की भी तैयारी है। पायलट ने पिछले तीन दिन में बाड़मेर, जोधपुर, अजमेर और अलवर जिले के दौरे करके सियासत को गरमा दिया है।

पायलट के दौरों से गहलोत समर्थकों की दूरी, इसी वर्टिकल डिविजन में अवसर: सचिन पायलट के हाल के जोधपुर, बाड़मेर के दौरों में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत समर्थक कोई विधायक और नेता स्वागत के लिए नहीं पहुंचा। गहलोत और पायलट खेमों के बीच यह वर्टिकल डिविजन ऊपर से लेकर नीचे तक साफ देखा जा सकता है। सचिन पायलट इसी वर्टिकल डिविजन में अवसर खोज रहे हैं। पिछले अरसे से कांग्रेस में चल रही खींचतान से यह नरेटिव भी बना है कि कांग्रेस की सियासत में गहलोत विरोधियों के नेता के तौर पर सचिन पायलट टॉप पर हैं। पायलट ने अब ग्राउंड कनेक्ट पर खास जोर देने का फैसला किया है।

पायलट के दौरों की टाइमिंग के सियासी मायने: मुख्यमंत्री अशोक गहलोत कोरोना के खतरे का हवाला देकर फिलहाल राजनीतिक दौरे नहीं कर रहे हैं। पूरे कोरोना काल में ही गहलोत जयपुर से बाहर बहुत कम गए हैं। गहलोत कोरोना के कारण अपने गृह जिले जोधपुर भी नहीं गए हैं। सचिन पायलट ने ऐसे वक्त में फील्ड के दौरे करने का फैसला किया है। पायलट के दौरे बढ़ने पर कांग्रेस में अंदरूनी सियासी पारा भी चढ़ेगा और फिर दोनों के बीच फील्ड में निकलने को लेकर तुलना भी होने लगेगी। उन्होंने अब लगातार फील्ड में सक्रिय रहने की रणनीति इन्हीं सियासी कारणों से की है। प्रदेश में चल रहे पंचायती राज चुनावों में कांग्रेस उम्मीदवारों के चुनाव कार्यालयों के उद्घाटन करके पार्टी के लिए फील्ड में काम करने का मैसेज देने की भी कवायद है।

साल भर से पायलट कैंप के मुद्दे अनसुलझे: सचिन पायलट और उनके खेमे के विधायक-नेता पिछले साल सुलह के वक्त तय हुए मुद्दों के समाधान की राह देख रहे हैं। बगावत के बाद हुई सुलह को 13 माह से ज्यादा का वक्त बीत गया है, लेकिन पायलट कैंप के उठाए मुद्दे अब तक अनसुलझे हैं।

राजस्थान में दो शिफ्ट में लगेंगे स्कूल

एक सितंबर से शुरू होने जा रहे स्कूलों में 9वीं-11वीं को सुबह और 10वीं-12वीं के छात्रों को दिन में बुलाने की प्लानिंग, दो पारी में स्कूल शाम छह बजे तक लगेंगे

निजी संवाददाता

बीकानेर। राजस्थान में एक सितंबर से सरकारी व प्राइवेट स्कूल शुरू हो जाएंगे। स्कूलों में न सिर्फ बच्चों को दूर बैठाया जाएगा, बल्कि स्कूल आने का समय भी अलग-अलग होगा।एक पारी स्कूल में 9वीं व 11वीं के स्टूडेंट्स को सुबह साढ़े सात बजे स्कूल आना होगा, जबकि 10वीं व 12वीं के स्टूडेंट्स आठ बजे स्कूल आएंगे।

दो पारी स्कूल में नौवीं व ग्यारहवीं को साढ़े बारह बजे बजे से साढ़े पांच बजे तक स्कूल रहना होगा, जबकि दसवीं व बारहवीं के स्टूडेंट्स को एक से छह बजे तक स्कूल में रहना होगा। दोनों की छुट्?टी में भी आधे घंटे का अंतर रहेगा। माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने ऐसे ही नियमों की सलाह स्?क्क (स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर) जारी कर दी है। खास बात ये है कि अगर कोई स्टूडेंट स्कूल नहीं आ रहा है तो उस पर दबाव नहीं बनाया जाएगा कि वो स्कूल आएं।

राज्य सरकार ने पिछले दिनों कक्षा 9 से 12 तक के स्टूडेंट्स के लिए ऑफलाइन क्लासेज शुरू करने की घोषणा की थी। एक सितंबर से शुरू हो रही इन क्लासेज के लिए सभी सरकारी व प्राइवेट स्कूल को SOP की पालना करनी होगी। पिछले सेशन में भी स्कूल शुरू हुए तब भी SOP जारी की गई थी। इस बार लगभग वैसे ही निर्देश दिए गए हैं। खास बात ये है कि इस बार समय में फेरबदल किया गया है। 9वी व 11वीं के स्टूडेंट्स सुबह साढ़े सात बजे से साढ़े बारह बजे तक स्कूल आएंगे, जबकि 10वीं व 12वीं के स्टूडेंट्स आठ बजे से एक बजे तक स्कूल में रहेंगे।

खुली क्लास में बैठेंगे स्टूडेंट्स

शिक्षा विभाग ने सभी स्टूडेंट्स को खुली क्लासेज में बिठाने के निर्देश दिए हैं। जिन क्लासेज में खिड़की होगी, उसी क्लास में बच्चे बैठ सकेंगे। बंद और बिना खिड़की व रोशनदान वाले कमरे में क्लासेज नहीं लगाने की सिफारिश की गई है।

पेरेंट्स की अनुमति लेनी होगी

एक बार फिर ऐसे नियम बनाए जा रहे हैं कि स्कूल को पेरेंट्स से ये लिखित में लेना होगा कि वो अपनी मर्जी से स्टूडेंट्स को स्कूल भेज रहा है और बच्चे कोविड नियमों का पालन करेंगे। अगर पेरेंट्स बच्चों को अनुमति नहीं देते हैं तो उस बच्चे के लिए आना अनिवार्य नहीं होगा।

इन नियमों का करना होगा पालन

- स्टूडेंट्स के बीच में दो गज की दूर रहेगी। एक ही टेबल पर अगर तीन स्टूडेंट्स के बैठने की व्यवस्था है तो वहां बीच की सीट खाली रहेगी।
- लंच के लिए बच्चों को ओपन स्पेस उपलब्ध कराना होगा। बच्चे लंच एक साथ नहीं करेंगे और वाटर बोटल भी घर से लेकर आएंगे। अगर नहीं लाए तो स्कूल से शुद्ध पानी देना होगा।
- स्टूडेंट्स-टीचर को फेस मास्क का उपयोग जरूरी
- प्रार्थना सभा नहीं होगी।
- खेलकूद गतिविधियों पर भी रहेगी रोक।
- विद्यार्थी को पेन, कॉपी, पेंसिल का आदान-प्रदान नहीं करना होगा।
- लंच बॉक्स किसी के साथ शेयर नहीं करें।
- अन्य विद्यार्थियों से शारीरिक दूरी बनाए रखेंगे।
- आपनी निर्धारित की गई सीट पर ही बैठेंगे।
- विद्यालय परिसर में अनावश्यक नहीं घूमेंगे।
- अपनी पानी की बोटल, सैनिटाइजर अपने साथ रखेंगे।
- जुकाम, खांसी, बुखार होने पर विद्यालय नहीं आएं।
- स्कूल में एंट्री और एग्जिट पर टीचर की ड्यूटी रहेगी, जो मास्क लगाने वाले स्टूडेंट को ही आने व जाने देगा।
- बस में स्टूडेंट को सीट आवंटित की जाएगी और स्टूडेंट्स वहीं पर बैठेंगे।
- जो स्टूडेंट स्कूल नहीं आ सकेंगे, उन्हें ऑनलाइन अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

नियम बन गए, सरकार से मांगी है स्वीकृति: राजस्थान के माध्यमिक शिक्षा निदेशक सौरभ स्वामी ने बताया कि शिक्षा विभाग ने SOP जारी कर दी है। इसकी अवहेलना करने पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। कोरोना से बचने के लिए स्कूल टीचर्स व पेरेंट्स दोनों को सहयोग करना चाहिए।

राजस्थान में 1 करोड़ लोगों का वैक्सीनेशन पूरा

ऐसा करने वाला देश का 5वां राज्य बना राजस्थान; अब तक कुल 4.12 करोड़ डोज लगाए गए

जयपुर। कोरोना की तीसरी लहर की आशंका के बीच अच्छी खबर है। राज्य में 1 करोड़ से ज्यादा लोग ऐसे हैं, जिनका वैक्सीनेशन पूरा हो चुका है। यह राज्य में कुल लाभार्थियों का 19.59% है। देश में राजस्थान 5वां ऐसा राज्य बन गया है, जहां एक करोड़ से ज्यादा लोगों का वैक्सीनेशन पूरा हो चुका है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने कहा कि गुरुवार को वैक्सीनेशन अभियान के दौरान 1 करोड़ से अधिक लोगों को दोनों डोज लगाकर प्रदेश की करीब 19.59त्न लक्षित जनसंख्या को वैक्सीनेट किया जा चुका है। उन्होंने बताया कि राज्य में 4 करोड़ 12 लाख 67,359 लोगों को कोरोना वैक्सीन की कुल डोज लगाई जानी है। इसमें 3 करोड़ 12 लाख 58,116 लोगों को पहली, 1 करोड़ 9 हजार 243 लोगों को दोनों डोज लगाई जा चुकी है।

कहां-कितना वैक्सीनेशन: राजस्थान के अलावा देश में 4 ऐसे राज्य हैं, जहां एक करोड़ से ज्यादा लोगों का वैक्सीनेशन पूरा हो चुका है। इसमें गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल शामिल है। सबसे ज्यादा महाराष्ट्र में 1.47 करोड़ लोगों का वैक्सीनेशन पूरा हो चुका है। दूसरे नंबर पर गुजरात में 1.10 करोड़, तीसरे नंबर पर पश्चिम बंगाल में 1.06 करोड़ और चौथे नंबर पर उत्तर प्रदेश में 1.05 लोगों का वैक्सीनेशन पूरा हो चुका है।

जैसलमेर में सबसे कम वैक्सीनेशन

जिलेवार वैक्सीनेशन की बात करें तो सबसे कम वैक्सीन जैसलमेर जिले में लगी है। यहां अब तक कुल 3 लाख लोगों को वैक्सीन का पहला डोज लगा है। इनमें से 87 हजार 793 ऐसे लोग हैं, जिनका वैक्सीनेशन पूरा हुआ है। सबसे ज्यादा वैक्सीन जयपुर जिले में लगी है। यहां अब तक कुल 32 लाख 11 हजार 320 लोगों को वैक्सीन लग चुकी है। इसमें से 11 लाख 64,163 लोगों को दोनों डोज लग चुकी है।

राजस्व वसूली के लिये निगम ग्रेटर का विषेष अभियान

यूडी टैक्स बकायादारों की सम्पत्तियां कुर्क करने के निर्देश

डेयरी बूथ किराया बकायादारों पर होगी सीज की कार्यवाही

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। बकाया राजस्व की वसूली के लिये निगम ग्रेटर की और से विषेष अभियान चलाया जायेगा। आयुक्त यज्ञ मित्र सिंहदेव ने राजस्व समीक्षा बैठक को सम्बोधित करते हुये निर्देष दिये है कि जिन डेयरी बूथ संचालकों ने किराया जमा नहीं करवाया है उनको नोटिस देकर किराया नहीं जमा कराने पर डेयरी बूथों को सीज किया जाये। गौरतलब है कि शहर में 900 से अधिक डेयरी बूथ संचालित है जिनमें से मात्र 227 डेयरी बूथों का ही वार्षिक किराया जमा करवाया गया है। आयुक्त ने नगरीय विकास कर की वसूली को गति देने के लिये 10 लाख रूपये से अधिक के 193 बकायादारों जोनवार सूची तैयार कर वसूली निर्देष दिये है। उन्होंने 1 लाख से अधिक बकाया के मामलों में कुर्की की पत्रावलियां तैयार करने के निर्देष भी बैठक में दिये। इसके साथ ही नगरीय विकार कर वसूली एवं सर्वे के डेटा में कमी को देखते हुये आयुक्त ने फर्म को कार्य में तीव्रता लाने एवं कार्य की गुणवत्ता बढ़ाने के निर्देष भी दिये।

अवैध रोड कटिंग वालों पर होगी कार्यवाही

आयुक्त ने बैठक में अधिकारियों को निर्देष दिये है कि अवैध रूप से रोड़ कटिंग करने वाले, अवैध सीवर कनेक्षन करने वाले भवनों का भी अभियान चलाकर चिन्हिकरण किया जावे एवं जुर्माना वसूला जाये। इसके साथ ही सभी जोन उपायुक्तों को निर्देष दिये कि नगर निगम द्वारा अधिसूचित 5 नियमों के अन्तर्गत सभी प्रकार के ट्रेड लाइसेंस, कोचिंग, लाइब्रेरी, दुकान, पी.जी. हॉस्टल, हॉस्पिटल, क्लीनिक, तम्बाकू उत्पाद आदि बेचने वाले प्रतिष्ठानों को भी सर्वे करके लाइसेंस जारी किये जाये। इसके साथ ही लीज मनी, भवन निर्माण स्वीकृति, मोबाइल टॉवर आदि मदों से भी राजस्व वृद्धि करने के निर्देष आयुक्त ने अधिकारियों को दिये। इस दौरान अतिरिक्त आयुक्त बृजेष कुमार चांदोलिया, वित्तीय सलाहकार अचलेष्वर मीणा, सभी जोन एवं मुख्यालय के उपायुक्त, राजस्व अधिकारी तथा अधिषाषी अभियन्ता उपस्थित रहे।

हिलव्यू समाचार

एक बार फिर लेकर आ रहा है

'शिक्षक दिवस' पर विशेषांक

जिसमें आप भेज सकते हैं अपने गुरु के साथ बीता वक्त,वाकया, संस्मरण, कविता, शिक्षा, दोहावली, लघुकथा या कोई भी रचना गुरु महिमा पर

"मेरे गुरु की गाथा"

और इसी के साथ एक महत्वपूर्ण बात!

इंटरव्यू के माध्यम से अपने जीवन की उपलब्धियों को भी आदर्श रूप में प्रस्तुत करने का शानदार मौक़ा है आपके पास

"मेरी सफल जीवन यात्रा"

रचनाएँ भेजने की अंतिम तिथि 5 सितम्बर व इंटरव्यू के लिए अंतिम तिथि 3 सितम्बर।

संपर्क करें: 9460678701

फायर एनओसी नहीं लेने वालों पर निगम ग्रेटर करेगा कार्रवाई

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। आमजन को अग्नि दुर्घटनाओं से बचाने के लिए नगर निगम ग्रेटर फायर एनओसी नहीं लेने वालों पर अब सख्त कार्यवाही करेगा। आयुक्त यज्ञ मित्र सिंहदेव ने बताया कि नेशनल बिल्डिंग कोड 2016 में वर्णित अग्निशमन उपकरणों/तकनीकी पैरामीटर्स की पालना सुनिश्चित करते हुए फायर एनओसी लिया जाना आवश्यक होगा।

आवासीय भवन जैसे छात्रावास, पीजी, फ्लैट्स/स्टूडियो अपार्टमेन्ट/सर्विस अपार्टमेन्ट, गेस्ट हाउस, धर्मशाला जिनकी ऊंचाई 9 मीटर या इससे अधिक है तथा अन्य समस्त प्रकृति के आवासीय भवन जिनकी ऊंचाई 15 मीटर से अधिक है। वाणिज्यिक भवन जैसे होटल, रेस्टोरेन्ट, बार, रिसोर्ट, मोटल, रूफटॉप रेस्टोरेन्ट, समस्त सभागार भवन, मैरिज गार्डन, डांस क्लब, व्यवसायिक एवं व्यापारिक स्थल (जिनकी ऊंचाई 9 मीटर या इससे अधिक है), पेट्रोल पम्प, गैस फिलिंग स्टेशन, अन्य ज्वलनशील पदार्थ स्टोरेज इकाई, स्टोरेज बिल्डिंग तथा 15 मीटर से अधिक ऊंचाई के समस्त व्यवसायिक भवन, संस्थानिक भवन जैसे सभी प्रकार के हॉस्पिटल, नर्सिंग होम, कोचिंग सेंटर एवं प्रशिक्षण संस्थान के लिए फायर एनओसी लेना अनिवार्य है। शैक्षणिक संस्थान जिनकी ऊंचाई 9 मीटर या उससे अधिक है, सभी प्रकार के सरकारी एवं गैरसरकारी भवन कार्यालय जिनकी ऊंचाई 6 मीटर से अधिक है तथा अन्य समस्त प्रकृति के संस्थानिक भवन जो 9 मीटर से ऊंचे है उनके लिये फायर एनओसी लेना अनिवार्य है। सभी प्रकार के औद्योगिक संस्थानों के लिये, हैजार्डस भवनों के लिए तथा अण्डरगाउण्ड बेसमेन्ट/स्ट्रक्चर्स जिनमें किसी भी गैर आवासीय गतिविधि संचालित हो और जिसका सकल निर्मित क्षेत्रफल 500 वर्गमीटर से अधिक हो, को एनओसी लेनी होगी।

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

02

जयपुर >> शनिवार, 28 अगस्त, 2021

संपादकीय

तालिबानी सोच से परास्त हुआ अमेरिकाः तालिबान के खिलाफ लड़ाई को कम करके आंकना अमेरिका की बनी नाकामी की वजह

गत 15 अगस्त को दुनिया ने अफगानिस्तान पर पुनः तालिबान का कब्जा होते हुए देखा। यह घटना अमेरिका और उसके सहयोगियों द्वारा बीस साल पहले शुरू किए गए युद्ध की विफलता का प्रतीक है। तालिबान के खिलाफ इस युद्ध में बड़े पैमाने पर जान, माल और संसाधनों का नुकसान हुआ। इतने व्यापक स्तर पर छेड़ी गई इस मुहिम का जो नतीजा निकला उसकी कल्पना नहीं की गई थी। ऐसे में गहन आत्मनिरीक्षण की आवश्यकता है।

वर्ष 1929 में संक्षिप्त गृहयुद्ध को छोड़कर पहले और दूसरे विश्व युद्धों के दौरान भी अफगानिस्तान काफी हद तक शांतिपूर्ण था, लेकिन 20वीं शताब्दी के मध्य से वहां की स्थिति बिगड़नी शुरू हो गई। अमेरिका और सोवियत संघ के बीच चले शीत युद्ध के दौरान अफगानिस्तान दोनों महाशक्तियों के बीच संघर्ष का अखाड़ा बन गया। वर्ष 1979 में तत्कालीन सोवियत संघ ने अफगानिस्तान पर आक्रमण कर दिया। इसके उपरांत 1990 के बाद वहां गृहयुद्ध छिड़ गया जिसने अफगानिस्तान को एक असफल राज्य में बदल दिया। उसका संघीय ढांचा चरमराता चला गया और तालिबान की सरकार बनने का मार्ग प्रशस्त हो गया। फिर 21वीं सदी की शुरुआत में एक बड़ी घटना घटी। अल कायदा नामक एक आतंकी संगठन ने अमेरिका पर बर्बर हमलों को अंजाम दिया। चूंकि अल कायदा अफगानिस्तान में पनाह लिए हुए था, लिहाजा अमेरिका ने जवाबी कार्रवाई में अफगानिस्तान पर आक्रमण कर दिया, जिसमें हजारों लोग मारे गए और उससे भी अधिक विस्थापित हुए।

अमेरिका के संयुक्त चीफ आफ स्टाफ के पूर्व वरिष्ठ सलाहकार कार्टर मल्कासियन ने अपनी एक किताब में तालिबान के बारे में बताया है कि '2019 में कंधार में तालिबान के एक धार्मिक विद्वान से उनकी मुलाकात हुई। उसने उन्हें बताया कि तालिबान अपनी आस्था के लिए लड़ते हैं, जबकि उनकी नजर में सेना और पुलिस पैसे के लिए लड़ती हैं। तालिबान अपनी आस्था के लिए अपना सिर कटवाने को तैयार हैं तो ऐसे में सेना और पुलिस उनसे कैसे प्रतिस्पर्धा कर सकती हैं?' वह आगे लिखते हैं कि 'तालिबान ने कुछ ऐसा निदर्शन दिया है, जिसने उसके लोगों को प्रेरित कर दिया है। जिसने उन्हें युद्ध में शक्तिशाली बना दिया है। उन्हें एक अफगान होने का मतलब बता दिया है।' जाहिर है तालिबान की विचारधारा के प्रसार का कारण तो अमेरिका को पता था, पर उसका प्रभावी प्रत्युत्तर देना उसे समझ नहीं आया। अमेरिका और उसके सहयोगियों ने तालिबान की हिंसा का मुकाबला हिंसा से करने का रास्ता चुना। उन्होंने इस अनुमान के आधार पर एक युद्ध छेड़ दिया कि वे अफगानिस्तान पर आक्रमण करेंगे और तालिबान का सफाया कर देंगे। 9/11 के बाद तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने कहा था कि 'तालिबान इसकी कीमत चुकाएगा', लेकिन हजारों सैनिकों, अरबों डालर, तकनीक और दूसरे संसाधन झोंकने के बावजूद परिणाम अमेरिकी सोच के उलट निकला। दरअसल अमेरिका और उसके साथी इंसानी लक्ष्य पर प्रहार करते रहे, इस बात से बेखबर रहे कि वास्तविक समस्या एक कट्टर विचारधारा थी।

यह वही अमेरिका है जिसने लगभग तीन दशक पहले साम्यवाद की बड़ी दीवार गिरा दी थी। फिर तालिबान के खिलाफ वह नाकामयाब कैसे हो गया? 1981 में अमेरिकी राष्ट्रपति बनने के बाद रोनाल्ड रीगन ने साम्यवाद का मुकाबला करने के लिए एक रणनीति तैयार की। उन्होंने कहा

कि अमेरिकी नीति में एक वैचारिक जोर की आवश्यकता है। इसके बाद पूंजीवाद को मजबूत करने के लिए हर उपलब्ध संसाधन का उपयोग किया गया। थिंक टैंक, साहित्य, मीडिया और अनेक माध्यमों से पूंजीवाद को साम्यवाद के एकमात्र उपयुक्त विकल्प के रूप में प्रदर्शित किया गया। परिणामस्वरूप कुछ ही वर्षों में सोवियत संघ बिखर गया, लेकिन तालिबान के मामले में अमेरिका ने वैचारिक लड़ाई को छोटा करके आंका। वह तालिबान को एक मामूली प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखता रहा और कोई बड़ी रणनीतिक योजना नहीं बना पाया, जैसी उसने सोवियत संघ के विरुद्ध बनाई। तालिबानी विचार पर हमला करने के बजाय उसने अफगानिस्तान में अपनी सैन्य कार्रवाई जारी रखी।

अफगानिस्तान के लोगों की धर्म को लेकर अपनी एक समझ है। यह उनके जीवन के लगभग हर हिस्से पर हावी है। तालिबान के संस्थापक मुल्ला उमर ने इस बात को बहुत पहले ही समझ लिया था। उसने कुरान और पैगंबर मुहम्मद साहब की शिक्षाओं की गलत व्याख्या कर उन्हें प्रचारित किया। आज जब बहुत से पढ़े-लिखे लोग भी 'जिहाद' और 'किताल' शब्दों में अंतर नहीं कर पाते हैं तो निरक्षर अफगानियों से कैसे उम्मीद की जा सकती थी? उन्हें कितने लोगों ने बताया होगा कि जिहाद का अर्थ 'आत्म-संघर्ष' है और किताल का अर्थ 'युद्ध'। जिहाद व्यक्ति के अपने संघर्ष का मामला है और किताल एक राज्य का विषय है। इस्लाम में शांति को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। मुहम्मद साहब शांति बनाए रखने के लिए सब कुछ त्यागने को तैयार थे। इस्लाम के नाम पर तालिबान द्वारा हिंसा उनके विचारों के विरुद्ध है। वास्तव में तालिबान जैसा समूह एक विचारधारा की गलत व्याख्या की ही अभिव्यक्ति है। ऐसी विचारधाराओं से हम सिर्फ युद्ध के जरिये नहीं निपट सकते। उनसे और गहराई से निपटने की जरूरत होती है। तालिबान जैसे संगठन इस्लाम की छवि को आहत करते हैं, जो इस्लाम के नाम पर अपने लक्ष्यों को हासिल करने में लगे हुए हैं। आज तालिबान का मुकाबला करने की जिम्मेदारी केवल अमेरिका या उसके सहयोगियों पर नहीं है, बल्कि मुस्लिम देशों के संगठन समेत दुनिया भर के प्रमुख मुस्लिम विद्वानों पर भी है कि वे ऐसी विचारधारा को रोकने का काम करें जिससे न सिर्फ दुनिया में अशांति बढ़ती है, बल्कि विश्व भर में रह रहे आम मुसलमानों के जीवन पर भी एक नकारात्मक असर डालती है।

LIFESTYLE जोन

समय के साथ-साथ परिवर्तन भी जरूरी है. आज के युग में दंपतियों, विशेषकर नवविवाहित जोड़ों को अपने वैवाहिक जीवन की खुशहाली के लिए अपने विचारों, अपनी भावनाओं का नजरिया थोड़ा बदलना ही चाहिए.

खुशहाल दांपत्य का हैप्पी मंत्रा

पहले विवाह का मतलब सिर्फ प्यार और समर्पण था, जिसमें ज्यादातर पत्नियां ही पति और उसके घर-परिवार के लिए समर्पित रहने में अपने जीवन की सार्थकता मानती थीं और त्याग व कर्तव्य की प्रतिमा बनी सारा जीवन खुशी-खुशी गुजार देती थीं. पुरुष भी ऐसी पत्नी पाकर खुश होते थे. उनकी सोच भी औरतों के लिए बस यही थी. पर आज हालात बदल गए हैं. स्त्री-पुरुष दोनों इस बात को समझ चुके हैं.

आज औरतें भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में काम कर रही हैं, आगे बढ़ रही हैं. आज प्यार और समर्पण की शक्ल प्यार और साझेदारी ने ले ली है, जो व्यावहारिक भी है. पति-पत्नी दोनों ही घर-बाहर के काम करते हैं, तो दोनों को ही एकदूसरे के काम में सहयोग द्वारा तालमेल बैठाकर चलने की जरूरत है. इसके लिए दांपत्य के 9 वचन निभाना जरूरी है.

प्यार, समर्पण और साझेदारी

अपनी आदतें, शौक, संस्कार जैसे मेरे, वैसे तुम्हारे

जो मेरा है, वह तुम्हारा भी

पति-पत्नी तय करें कि हम एक हैं, तो एक दूसरे की चीजों का इस्तेमाल क्यों न करें? उस दिन से सारा परायापन दूर हो जाएगा.

जैसे तुम्हारे मम्मी-पापा, वैसे मेरे

पति-पत्नी दोनों के परिवारों का, रिश्तेदारों का घर में बराबर का सम्मान जरूरी है, वरना आपसी रिश्ते कभी मधुर नहीं हो पाएंगे. यह तो गलत अपेक्षा है कि केवल पत्नी पति के घरवालों को पलकों पर बैठाए और पति उसके पीहर के लोगों को सम्मान न दे. पति का भी उतना ही फर्ज है.

जैसी मेरी जरूरतें, वैसी तुम्हारी भी

अपनी-अपनी जॉब, जरूरत व जिम्मेदारी पूरी करने में एक दूसरे का सहयोग होगा, तभी संबंधों में मधुरता आएगी और संबंध बना रहेगा वरना रास्ते बदलते देर नहीं लगती. पति-पत्नी एक दूसरे की छोटी-छोटी जरूरतें जैसे भूख-प्यास, नींद को भी तवज्जो दें. उसका दर्द, उसकी थकान समझें. लाइफ पार्टनर बने हैं तो यह जरूरी भी है.

पति-पत्नी अलग परिवारों से अलग परवरिश से आते हैं, पर दूसरे से अपने जैसा व्यवहार, रहन-सहन की ही अपेक्षा रखते हैं या अलग देख मखौल उड़ाते हैं तो यह ठीक नहीं, बल्कि हल ढूंढ़ना उचित है.

पॉकेट मनी खर्च पर नो रोक-टोक

दोनों लाइफ का सीधा फंडा रखें. घर खर्च में सहमति से शेयर करें लेकिन पॉकेट मनी पर एक दूसरे की टोकाटोकी न हो. शादी के बाद पति-पत्नी दोनों इन वचनों को आत्मसात कर लें तो जीवन प्रेमपूर्वक चलता रहेगा.

ब्यूटी ब्लंडर से बचेंगे तो बनी रहेगी सुंदरता

BEAUTY जोन

सुंदर दिखना और सुंदरता को बनाए रखना, दोनों ही अलग-अलग चीजें हैं. ब्यूटी प्रोडक्ट्स और मेकअप आपकी ब्यूटी को सिर्फ निखारते हैं. लेकिन गलत ब्यूटी हैबिट्स इसे जीरो भी कर सकती हैं. अगर आप चाहते हैं कि ब्यूटी प्रोडक्ट्स या ब्यूटी ट्रीटमेंट (केमिकल या होममेड) आपको हमेशा दमकता रखे तो इसके लिए बैड ब्यूटी हैबिट्स से बचकर रहें.

मेकअप रिमूव करें

आप रोजाना या किसी खास मौके पर मेकअप जरूर करती हैं. जितना मेकअप करने में तत्पर रहती हैं, क्या उसे रिमूव करने पर भी रहती हैं? शायद नहीं. जान लें कि रात में सोने से पहले मेकअप रिमूव करना बहुत जरूरी है. इसमें आपने आलस दिखाया तो एक-दो दिन में तो नहीं, लेकिन कुछ दिनों में स्किन सारे राज खोल देगी. आपको स्किन प्रॉब्लम्स, डार्क सर्कल्स, कील-मुंहासे, दाग-धब्बे, फाइन लाइंस की समस्या से जूझना होगा. रात को सोने से पहले मेकअप उतारकर व धुले चेहरे पर मॉइश्चराइजर लगाना कभी नहीं भूलना चाहिए.

बार-बार चेहरा छूना

बहुत-सी लड़कियों को बार-बार चेहरा छूने की आदत होती है. यदि आप भी ऐसा करती हैं, तो इसे अभी से छोड़ दें. हाथों पर तमाम तरह के बैक्टीरिया, धूल-मिट्टी, तेल व पसीना होता है, जो बहुत बार आंखों से नहीं दिखता. ऐसे में बार-बार चेहरे पर हाथ फेरने से स्किन प्रॉब्लम्स हो सकती हैं.

मुहांसों से छेड़खानी

आपको भी पिंपल्स से छेड़छाड़ की आदत है तो यह अभी से ही बंद कर दें. ऐसा करके एक पल के लिए आप खूबसूरत दिखेंगी, लेकिन आस-पास बैक्टीरिया फैलेंगे और अनगिनत स्किन प्रॉब्लम्स होंगी. मुहांसे के दाग फीके करने के लिए सोने से पहले टूथपेस्ट लगाएं.

पुराने मेकअप ब्रश से मोह तोड़ें

हर बार एक ही ब्रश से मेकअप कर रही हैं, तो बंद कर दें. ब्रश पर बैक्टीरिया और फंगस पनपते हैं. साथ ही गंदे ब्रशेज से मेकअप में फिनिशिंग आना संभव नहीं. हर एक-दो दिन में ब्रश को अच्छे से धोएं.

सनस्क्रीन को छोड़ना

बहुत-सी लड़कियां घर से बाहर जाने पर सनस्क्रीन नहीं लगातीं. रोज-रोज सनस्क्रीन को इग्नोर करने से डार्क लाइंस, रिंकल्स और डार्क सर्कल्स चेहरे पर दिखते हैं.

डॉगी से हमारा रिश्ता मज़बूत कैसे हो...

बच्चों की दुनिया...

प्यारे बच्चों को कविता आंट का ढेर सारा प्यार... मैंने आपके पिछली कड़ी में बताया था कि किस तरह डॉग्स हमारी सिक्योरिटी सर्विसेज़ में मददगार होते हैं, है न! तो इस बार मैं बता रही हूँ कि डॉग्स हमें बीमार होने पर भी कैसे दोस्त पूर्व हो सकते हैं। ये 1996 की सच्ची घटना है। साउथ अमेरिका में कहीं रहने वाले एल कॉलियर एक सुप्रसिद्ध, लोकप्रिय और व्यस्ततम स्पिरिचुअल गुरु थे। एक बार बीमार होने पर डायग्नॉसिस के बाद डॉक्टर ने बताया कि वो हृदय की ऐसी बीमारी से ग्रस्त हैं जो जान भी ले सकती है। डॉक्टर ने उन्हें दवायें और कम्प्लीट बेड-रेस्ट बताया ।

एल के ही घर में रहते थे दो डॉगीज़, एक छोटू सा शित्ज़ू ऐलेक्स, और दूसरा बड़ा सा लैब्राडोर लेडी । अब एल साहब का काम ही कुछ ऐसा था कि जिसमें उन्हें हमेशा लोगों की तकलीफ़ों पर ध्यान देना और अपनी राय देकर उनके डिप्रेशन को दूर करना, तनाव से बचाना और बेहतर खुशनुमा ज़िंदगी जीने में मदद करना शुमार था, तो वो भला कम्प्लीट बेड-रेस्ट कैसे अफोर्ड कर सकते थे! लेकिन इस समय तो उन्हें खुद की ज़िंदगी के लिए यही करना था न, आखिर जान है तो जहान है! पर लोगों को ये बात कहां समझ में आने वाली थी! तो बच्चों, एल साहब पूरी तरह से आराम कर सकें, ये जिम्मा पता है किसने उठाया? जी हाँ, इन्हीं दोनों डॉग्स ने!

पूरे छह से आठ हफ़्तों तक एलेक्स और लेडी ने पल-पल एल के मूवमेंट्स को बारी बारी से गार्ड किया। जैसे लेडी को खाने पीने या किसी और काम से बाहर जाना होता तो एलेक्स फ़ौरन उसकी जगह आ जाता । कई बार दोनों साथ में ख़्याल रखते और एवं को बिस्तर से उठने से रोकते थे, जैसे उन्हें सब पता हो कि एल के लिए आराम कितना ज़रूरी था। एल कोशिश भी करते तो छोटू एलेक्स फ़ौरन अपने शरीर से एल पर ज़ोर लगाते हुए उन्हें धीमे से लिटा देते जबकि साइज़ में बड़ी लैब्राडोर डॉग एल के पास लेट जाती और अपने बड़े पॉज़ को एल के कंधों पर रखकर आँखों ही आँखों में उनसे विनती करती कि 'प्लीज़, आपको आराम की सख़्त ज़रूरत है, काम करना इस वक्त आपके लिए ठीक नहीं है!' और अगर कोई मिलने आ जाता तो ये दोनों जो गुर्रा-गुर्रा कर उसकी लानत-मलामत करते कि बेचारा डर के भाग ही जाता। भई, सेहतमंद करने के लिये स्ट्रिक्ट तो होना ही पड़ता है न!

एक बार एक जिद्दी महिला ने वार्निंग देने के बाद भी जब ज़्यादा समय तक काउंसिलिंग लेने कि कोशिश की और एल बहुत ज़्यादा थकने लगे तो डॉग्स ने चेतावनी पढ़ ली और गुर्रा कर उस महिला को दरवाज़े का रास्ता बता दिया।

बच्चों, किसी की ऐसी लगन से सेवा तो अपने भी नहीं कर पाते जैसी इन डॉग्स ने एल की की थी जबकि ये एल के अपने डॉग्स थे भी नहीं, ये तो उनके स्टेप सन् के डॉग्स थे।

एल ने इन्हें अपना ' गार्जियन-एंजल ' माना था। और वो क्यों, आगे सुनिये ।

एल जब बिल्कुल ठीक हो गये तो उन्होंने फिर से अपना काम सँभाल लिया । अब ये डॉग्स एल के पास भी नहीं जाते थे, मतलब अपने काम से काम रखते थे। एल को भी इनसे कोई लेना-देना नहीं था। पर एक दिन एल ने कुछ ज़्यादा ही काम हाथ में ले लिया और उनकी बीमारी रीसैंपल कर गई। वो थकान से लड़खड़ाते हुए सीढ़ियाँ चढ़कर अपने बिस्तर पर बेहोश से होकर गिर पड़े । जब उन्हें होश आया तो एलेक्स और लेडी दोनों डॉग्स के अपने दोनों तरफ़ लेटा हुआ पाया , जैसे वो एल की रक्षा रहे हों। एल इसके बाद कई सालों तक अपना काम बखूबी करते रहे इन दोनों एंजल्स यानी कि डॉग्स की बदौलत ।

बच्चों है न कितनी प्यारी बात कि हमारे आसपास इतने सुंदर दोस्त रहते हैं! अगली बार कुछ और मज़ेदार बातों के साथ आऊँगी, तब तक के लिये एदिओस, यानी कि साउथ अमेरिका में सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषा यानी कि स्पैनिश में बाय-बाय!

■ कविता माथुर

TODAY'S रेसिपी

हांडवो

सामग्री- मिक्स दाल 1 कप, चावल 1/2 कप, घिसी लौकी 1 कप, घिसी गाजर 1 कप, बारीक कटा प्याज 1, अदरक हरी मिर्च पेस्ट 1 टीस्पून, कटी हरी धनिया 1 टीस्पून, नमक 1/2 टीस्पून, तेल 1 टीस्पून, चाट मसाला 1/2 टीस्पून.

बघार के लिए- करीपत्ता 8, राई 1/4 टीस्पून, लाल मिर्च पाउडर 1/4 टीस्पून, तेल 1 टीस्पून.

विधि- दाल और चावल को 5-6 घंटे भिगोकर पानी निकाल दें. इसे आधे कप पानी के साथ मिक्सी में पीस लें. अब इसे रात भर अथवा 8 घंटों के लिए ढंककर रख दें ताकि इसमें खमीर उठ जाए. अब सभी सब्जियां, हरी धनिया, नमक, अदरक, हरी मिर्च का पेस्ट और 1/2 कप पानी डालकर भली भांति चलाएं. एक चम्मच तेल में बघार की सामग्री डालकर तैयार घोल में डालकर चलाएं. एक कढ़ाई या भगोने में 1 लीटर पानी उबलने रखें. अब एक किनारे वाली प्लेट या थाली में चिकनाई लगाकर तैयार मिश्रण को डालकर भगोने के ऊपर रखकर ढंक दें. भाप में 25 मिनट तक पकाएं. ठंडा होने पर चौकोर टुकड़ों में काट लें. अब एक नॉनस्टिक पैन में 1/4 टीस्पून तेल डालकर कटे टुकड़ों को मद्धिम आंच पर दोनों तरफ से सुनहरा होने तक सेंकें. ऊपर से चाट मसाला बुरककर चटनी या सॉस के साथ सर्व करें.

भरवां कुकुम्बर

सामग्री- ककड़ी - 2, जीरा-1/4 टी स्पून, रिफाइंड आयल या सरसों का तेल -1 टेबल स्पून, सौंफ पाउडर-1/2 छोटा चम्मच, हल्दी पाउडर -1/4 टी स्पून, लाल मिर्च पाउडर-1/2 टी स्पून, धनिया पाउडर-2 टी स्पून, अमचुर पाउडर-1/4 टी स्पून, गरम मसाला-1/4 टी स्पून, नमक स्वादानुसार.

विधि- ककड़ी को अच्छे से धोकर लगभग 4 इंच के बराबर-बराबर पीस में काट लें. फिर हर ककड़ी के पीस में एक साइड पर कट लगा दीजिए जिससे उसके अंदर फिलिंग भरी जा सके. अब एक बाउल में ऊपर दिए गए मसाले जैसे धनिया पाउडर, अमचुर पाउडर, लाल मिर्च पाउडर, हल्दी पाउडर, सौंफ पाउडर, गरम मसाला और नमक डालकर उसे अच्छे से मिला लें. अब उसमें 1 छोटा चम्मच रिफाइंड या सरसों का तेल डाल लें ताकि मसाला हल्का सा गीला हो जाए और फिलिंग के बाद बाहर न निकले. अब इस फिलिंग को ककड़ी के कट लगे वाले साइड में फिल कर दें. ध्यान रखें कि ज्यादा नहीं फिल करना है. एक कढाई में 1 टेबलस्पून सरसों का तेल या रिफाइंड ऑइल डाल कर उसे थोड़ा गर्म करें. अब उसमे जीरा डाल दें. जीरा भुन जाने के बाद उसमें फिल की हुई ककड़ी डाल दे. अब उसे अच्छे से मिलाकर एक ढक्कन से कढाई को ढंक दें. हर 3 से 4 मिनट के बाद ढक्कन खोल कर उसे चलाते रहें. ऐसा 2 से 3 बार करें, फिर उसे कलछी से दबाकर चेक कर लें कि ककड़ी पक गई है या नहीं. अगर अब ककड़ी पक गई है तो ढक्कन को हटाकर उसे खुले में पकाएं. इससे उसका सारा पानी सूख जाएगा. अब जब भरवां पूरी तरह सूख जाए तो उसमें ऊपर से भुना हुआ धनिया, गरम मसाला और अमचुर पाउडर भी डाल कर मिला सकते हैं. इससे स्वाद और बढ़ जाएगा.

पैनकेक डिप ट्रैंगल्स

सामग्री- 1 कप आटा, 1 कप दही, 1/2 कप मटर, 50 ग्राम पनीर, 1 बड़ा चम्मच अदरक लहसुन व हरीमिर्च का पेस्ट, 1 बड़ा चम्मच धनिया पत्ती, 3 बड़े चम्मच तेल, नमक स्वादानुसार.

विधि- दही में मटर, पनीर, अदरक लहसुन व मिर्च पेस्ट, धनियापत्ती व नमक मिला लें. आटे में नमक डाल कर पानी के साथ घोल बना लें. गरम तवे पर इसका पैनकेक बना लें. चीले के ऊपर डिप लगाकर एक के ऊपर एक परत लगा लें. ऊपर डिप की परत लगा लें, फिर सीजनिंग करें व परोसें.

इंस्टेंट जाली डोसा

सामग्री- सूजी 1 कप, चावल का आटा 1/4 कप, मैदा 1 टेबलस्पून, नमक स्वादानुसार, दही 1 टेबलस्पून, चाट मसाला 1/4 टीस्पून, लाल मिर्च पाउडर 1/4 टीस्पून, बारीक कटा हरा धनिया 1 टेबलस्पून, बारीक कटी हरी मिर्च 1 टीस्पून, बारीक कटा प्याज 1, हींग 1 चुटकी, तेल 1 टेबलस्पून

विधि- तेल को छोड़कर समस्त सामग्री को एक बाउल में अच्छी तरह मिला लें. एक ग्लास पानी मिलाकर 20 मिनट के लिए ढककर रख दें. 20 मिनट बाद चलाकर इसमें इतना पानी मिलाएं कि मिश्रण रनिंग कंसिस्टेंसी वाला हो जाए अर्थात एकदम पतला घोल तैयार करें. एक नॉनस्टिक पैन पर चिकनाई लगाकर 1 चम्मच घोल को ऊंचाई से गिराएं, इससे डोसे में जगह-जगह जाली सी बनती जाएगी. डोसे को आमतौर पर तवे पर अंदर से बाहर की ओर फैलाया जाता है परन्तु इसे आप तवे के किनारों से फैलाना प्रारम्भ करके सेंटर तक लेकर आएं. मद्धिम आंच पर पकाएं, एक साइड से सिक जाने पर पलटकर दूसरी ओर से सेंकें. दोनों तरफ से सुनहरा हो जाने पर चटनी या अचार के साथ सर्व करें. आप चाहें तो इसमें पालक प्यूरी या चुकंदर का ज्यूस मिलाकर हरा और गुलाबी जाली डोसा भी तैयार कर सकते हैं.

पुण्यतिथि पर विशेष (15 अप्रैल 1925-27 अगस्त 2005)

जनाब मंज़ूर अहमद एजाज़ी

वो जुमे (शुक्रवार) का दिन था ,मैं जुमे की नमाज़ पढ़ कर आया और छबड़ा स्थित अपने ऑफ़िस में क़ुरान शरीफ़ पढ़ रहा था, अचानक पढ़ते पढ़ते हुर्फों(शब्दों) की जगह मुझे पाली मारवाड़ स्थित क़ब्रिस्तान में अपने चचा साहिब की क़ब्र दिखाई दी । मैं एकदम हड़बड़ा गया, अब मेरा दिल क़ुरान पढ़ने में बिल्कुल नहीं लग रहा था । मैं ने पाली फ़ोन लगाया ,तब मेरी बड़ी बहिन शगुफ़्ता वहीँ रहती थीं,मैं ने डैडी साहिब के बारे में पूछा तो मुझे जवाब मिला के जुमे की नमाज़ पढ़ने मस्जिद गये हैं ।

वक़्त नहीं गुज़र पा रहा था, मेरे दिल की बैचेनी मैं ही समझ सकता था । मैं बार बार फ़ोन लगाता और वह कोई बहाना बना देती लेकिन डैडी साहिब की मुझसे बात नहीं करवा पाई।

जूही उस समय जयपुर में थीं, शगुफ़्ता ने उन्हें कॉल लगाई कि डैडी साहिब नमाज़ पढ़ कर आ रहे थे कि ऑटो रिक्शा से एक्सीडेंट हो गया, उन्हें हॉस्पिटल में ले गये हैं पाँव में थोड़ी चोट है और भय्या के बार बार छबड़ा से फ़ोन आ रहे हैं मेरी हिम्मत नही हुई उसे सच बताने की। जूही ने मुझे छबड़ा कॉल लगा कर डैडी साहिब के एक्सीडेंट की ख़बर सुनाई । मेरी धड़कनें तेज़ हो गईं ,पसीने से मेरा चेहरा तरबतर हो गया , हाथ पाँव काँप रहे थे। पिछले घण्टे दो घण्टे की अपनी बैचेनी और घबराहट की वजह अब समझ आई। ख़ैर छबड़ा से पाली का 500 किमी का सफ़र कैसे तय किया उसके लिये मेरे पास शब्द नही। बार बार वही क़ब्र मेरी निगाह के सामने आ जाती और मैं पसीने से भीग जाता। पाली के बांगड़ हॉस्पिटल कॉटेज वार्ड में जब डैडी साहिब को देखा और वास्तव में एक पाँव में ही चोट देखी, ख़तरे से बाहर देखा तो दिल को तसल्ली मिली।

डैडी साहिब ने मेरे सलाम का जवाब नहीं दिया और छबड़ा में मस्जिद का काम शुरू करने के लिये कहा जो उनका कमिटमेंट था । धीरे धीरे कुछ कॉम्प्लिकेशन होने लगे , हम उन्हें जयपुर सन्तोक बा हॉस्पिटल में ले आये जहाँ हमारे मित्र तपन बनर्जी ऑर्थोपेडिक सर्जन थे । पाँव की चोट तो बहाना साबित हुआ, छोटी सी चोट थी लेकिन पल्मोनरी अम्बोलिस्म की वजह से उनको साँस लेने में दिक्कत आने लगी , कुछ दिन इलाज सही चलता रहा, हम सोच भी नहीं सकते थे।

26 अगस्त की रात अचानक उनकी तबियत बिगड़ती गई, इत्तफ़ाक़ से मैं उस रात पहली बार उनके पास ठहरा और अकेला था उसके पहले वहाँ छोटा भाई मुज़फ़्फ़र ही ठहरते थे। धीरे धीरे स्थिति गम्भीर होती गई 27 अगस्त 2005 को सुबह 5 बजे डैडी साहिब मेरे देखते ही देखते हमसे जुदा हो गये ।

मैं हॉस्पिटल में उस समय तन्हा था, ऐसा लगा दुनिया में ही तन्हा हो गया। मस्तिष्क शून्य सा हो गया।

गत कुछ दिनों का घटना क्रम एकदम सामने घूम गया ,जब सब कुछ सामान्य था तभी अचानक क़ुरान शरीफ़ के अक्षरों की जगह क़ब्र नज़र आई और कुछ दिनों बाद ही जैसे दुनिया लुट गई हो ।

क्या था यह ? जिस वक़्त मेरे डैडी साहिब नमाज़ पढ़ कर बाहर निकल कर सड़क पर गिरे होंगे उसी समय 500 किमी दूर मुझे किसने क़ब्र दिखा दी ? कौन सी वो शक्ति थी?

क्या यहाँ साइंस के नियम मनुष्य के मस्तिष्क की तरंगों के सामने नतमस्तक नहीं हो जाते हैं जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है?

क्या यही है इन्ट्यूइशन,टेलीपैथी,पूर्वाभास, अल्हाम ।

बेशक जिनसे हमारी रूह के रिश्ते बने होते हैं, उसका अच्छा बुरा हमें पहले ही मालूम हो जाता है।

हर इंसान की ज़िन्दगी में इस तरह की घटनाएँ अवश्य घटित होती हैं परन्तु महसूस वही करता है जो अति संवेदनशील होता है या उससे रूहानी लगाव होता है ।

आज डैडी साहिब को गये हुए 16 साल हो गये हैं और यह कल की ही बात लगती है ।आज भी अचानक वो मुझे ख़्वाबों में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, मैं अपने आसपास देखता हूँ कि शायद मुझसे कोई ग़लती हुई है या मुझे कुछ बताना चाहते हैं ,मैं चिंतन करता हूँ और बस उनमें खो जाता हूँ। वाकई माँ बाप का वुजूद हमारे साथ ज़िन्दगी भर बना रहता है ।

आजादी पर मेरे विचार

शोभा गोयल जयपुर

बिट्रिश हुकूमत से आजाद होने के हिलोरे मारती भारतीय तमन्ना से उपजे आन्दोलन के जवाब में भारत को स्वतंत्र किया गया। हमने आजादी के 75 बसंत देख लिए। आज के दिन एक दुर्गम लम्बी यात्रा बीहड़ से निकल कर देश अपने गन्तव्य तक पहुंचा था। तब के भारत में और आज के भारत में जमीं आसमां का अंतर आ गया हैं। 1947 में जब भारत आजाद हुआ तब देश कई टुकड़ों में बटा हुआ था और कई समस्याएँ सिर उठायें खड़ी थी। 52 करोड़ 40 लाख की आबादी, अलग अलग 15 बड़ी भाषाएँ, उसके टकराते धर्मो और कई कई जातियों होने के वाबजूद आज भारत एकताबद्ध खड़ा हैं इसके साथ ही लोकतंत्र की बगिया हरी भरी और रंगीन सुंदर बनाये रखी हैं। भारत की स्वंत्रता के आस पास या बाद में स्वंतत्र हुए देश न अपनी आजादी कायम रख सके न ही लोकत्रंत को।

आज भारत में कई चुनोतियाँ सामने खड़ी ललकार रही हैं सबसे बड़ा सवाल यह हैं की भारत को सबसे पहले किससे आजादी चाहिए। मेरा मानना है की भारत को अपनी स्वंत्रतता के दुरुपयोग करने से रोकने की आजादी होनी चाहिए। वर्तमान में विश्वव्यापी महामारी कोविड-19 से भारत भी अछुता नही हैं। दिनों दिन बढ़ते केसेज महामारी को और भी भयावह बना रहे हैं। ऐसे में देश की सरकार बीमारी से निपटने के लिए अपने स्तर से उपर उठकर समुचित व्यवस्था कर रही हैं इसके साथ ही आम नागरिको का भी अपनी सेहत और सुरक्षा के प्रति जागरूक होना आवश्यक हैं। इस बीमारी से निपटने के लिए न केवल सरकार जिम्मेदार है बल्कि आम नागरिक की भी उतनी ही महत्वपूर्ण जिम्मेदारी बनती हैं की वह सरकार द्वारा जारी किये गये दिशा निर्देशों को की सही से पालना करे। पर हो उल्टा रहा हैं आम नागरिक घुटन का बहाना कर मास्क लगाने से ही परहेज कर रहा है बस चालान के डर से वो कुछ देर अपने चेहरे को ढक लेता हैं। ये गलत हैं ऐसे तो वर्तमान में इस वायरस से उपजे हालत से हम कैसे निपटेगें।

कोरोना वायरस के कारण लॉकडाउन किया गया। लॉकडाउन के परिणामस्वरूप देश की अर्थव्यवस्था 10 वर्ष पीछे चली गयी। आज आम इंसान दाल रोटी की जुगाड़ में सुबह से शाम तक मारा मारा फिरता हैं। ऐसे समय में हम किस प्रकार की आजादी की बात करते हैं। एक तरफ जहाँ विकास की चकाचौंध, विकास के आंकड़े, मंगलयान और राफेल की हम चर्चा करते हैं वही दूसरी और आम नागरिक भूखमरी और गरीबी के कारण आत्महत्या करने को मजबूर हो रहे हैं। आये दिन हम किसानो और मजदूरों के आत्महत्या की खबरे सुनते हैं। भारत को बेरोजगारी से मुक्ति चाहिए। हमे ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि देश का कोई व्यक्ति भूख से तंग आकर अपने जीवन को खत्म करने की सोचे ही नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रतिभा का उपयोग करने की पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए इसके साथ ही उसके साथ ही उसके दोस्तों को भी अपनी प्रतिभा का उपयोग करने की स्वंत्रता मिलनी चाहिए लेकिन इसका मतलब यह नही की किसी भी व्यकित को अपनी प्रतिभा से होने वाले लाभों से मनमाने उपयोग का अधिकार मिल गया एकाधिकार नहीं होना चाहिए इससे निरकुंशता पैदा होती हैं।

आये दिन सरहद पर आतंकवाद की खबरे आती हैं। देश के आतरिंक हिस्सों में भी बम फूटने की सुचना मिलती रहती हैं। भारत जैसे विशाल लोकतंत्र पिछले कई वर्षो से आतंकी हमलो से जूझ रहा हैं हमारे यहाँ के जवान अपने वतन की हिफाजत और आम लोगो से रक्षा के लिए अपनी जान की बाजी लगाते आ रहे हैं ऐसे में देश को इन असामाजिक और जेहादी ताकतों से निपटने के लिए ठोस कदम उठाकर देश की सीमा के साथ साथ आम जनता की रक्षा करनी चाहिए। हमे आंतकवाद से आजादी चाहिए।

आज के समय में स्वतंत्रता की सवाधिक चर्चा में स्त्री स्वंत्रता को लेकर होती हैं स्वंत्रता के नाम पर आधी आबादी को दरकिनार कर दिया गया था। एक वर्ग अपनी शान में वर्तमान में नारी बराबरी का दर्जा पाने को व्याकुल हैं। स्वतंत्रता की आड़ में कितनी महिलाओ का आज भी शोषण हो रहा हैं चाहे घर रहने वाली महिला के साथ मारपीट का किस्सा या फिर कामकाजी महिला के सैलरी का पुरुष द्वारा हक जताना। वह किसी रूप में आज भी स्वतंत्र नही हैं। एक तरफ जहाँ उसे नौकरी की जरूरत नही है। फिर भी वह कैरियर के नाम पर बाहर निकलती हैं और घर की देखभाल के लिए एक कामवाली महिला को कुछ हजार देकर गुलाम बना लेती हैं। तब क्या इसे हम स्वंत्रता की सही तस्वीर कहेंगे। कितने ही मातापिता वृद्धाश्रम में रह रहे हैं। अपने जिस घर को उन्होंने अपनी मेहनत से बनाया। क्या उन्हें उनके अपने ही घर में रहने की आजादी नही दे सकते। इसके लिए जरूरी होगा हमें हमारे पूर्वाग्रहों से मिले आजादी। जब हम 21 सदी में जी रहे है तो बेटे बेटी में कैसा भेदभाव। हमे खुद से खुद के विचारो को खोलने की आजादी चाहिए हमे खुद को आगे बढ़ने की आजादी देनी होगी।

क्षेत्र कोई भी हो चाहे आर्थिक, सामाजिक, राजनितिक या धार्मिक । हमे स्वंत्रता के सही अर्थ गढ़ने होगे नयी परिभाषा लिखनी होगी। खुद को संयमित करना होगा। भरत को सबसे ज्यादा आजदी के मायने क्या हैं इसे समझने की और उस पर अमल करने की आजादी चाहिए।

सत्कार वुमन्स वेलफेयर सोसायटी ने पुलिसकर्मियों को बांधे रक्षासूत्र

जयपुर। नाहरगढ़ थाना के तत्वाधान में 24 अगस्त को सखी सुरक्षा के तहत महिलाओं व बालिकाओं के लिए एक जागरूकता अभियान सत्कार वुमन्स वेलफेयर सोसायटी द्वारा बैठक का आयोजन रखा गया। संस्था की अध्यक्ष एवं प्रबन्धक बरखा शर्मा ने बताया इस कार्यक्रम में थाना इंचार्ज मुकेश ने समाज में हो रहे अपराध पर चर्चा की और निर्भय हो कर सामना करने के लिए जागरूक किया। पुलिस व जनता के मध्य एक कड़ी बनने का संस्था को जिम्मा दिया गया। साथ ही रक्षा बन्धन का कार्यक्रम रखा गया। सत्कार परिवार की तरफ की ओर से सभी सदस्यों ने थाना इंचार्ज मुकेश, सबइंस्पेक्टर आरती, शबनम एवं सभी पुलिसकर्मी गण को रक्षासूत्र बांध कर अपनी ओर समाज की रक्षा करने के लिए निवेदन किया। इस कार्यक्रम में संस्था की सदस्यों के साथ थाना विभाग की शबनम, स्नेहा, माला, कविता, मधु, कोमल, ज्योति, रेणु, रिंकू एवं कई सदस्य उपस्थित रहे।

प्रेम क्या है !

प्रेम ईश्वर द्वारा दिया गया अमूल्य उपहार है,
प्रेम को सब ने अपने ढंग से जाना,
किसी ने प्रेम को प्रेम माना,
तो किसी ने प्रेम को मोह जाना,
प्रेम की वास्तविकता इन दो शब्दों में समाई है,
कहने को तो ढाई आखर है,
किन्तु इसमें पूरी सृष्टि समाई है,
प्रेम में न स्थान है कहीं किसी छल का,
न ही स्थान है कहीं कोई आडंबर का,
प्रेम जिससे भी हो जाए इस जग में,
बस वही बन जाए रूप राधामोहन का ,
प्रेम में काहे छूरियाँ चलती हैं ,
कभी जो चले छूरियाँ तो वह प्रेम नहीं है भाई ,
द्रुतगति से उसे जीवन से बाहर करना,
मोहन की शक्ल में रावण से प्रेम न करना,
प्रेम तो सिर्फ त्याग माँगता है,
लेने की चाहत कभी न रखना,
स्वच्छंद आसमां की तरह प्रेम है,
प्रेम को बांधने का प्रयास न करना,
प्रेम के रंग में स्वयं को रंग कर,
संसार को प्रेम के रंग से है रंगना,
ना कोई ईर्ष्या ना ही वासना,
प्रेम तो है बस ईश्वर की उपासना,

पूजा माथुर, जयपुर

15 अगस्त 2021 को पूरा हिंदुस्तान स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाने जा रहा है ऐसे तो आजादी के मायने बहुत अलग हैं परंतु आजादी के 75 वर्ष बाद हिंदुस्तान अपने एक नए मुकाम की ओर अग्रसर होते हुए विकास के नए आयाम को छूने का प्रयास कर रहा है वहीं पर 135 करोड़ की आबादी वाले इस देश में एक विश्लेषक के नाते बहुत सारे सवाल मन में आते हैं और वह सवाल हैं...

अगर है तो कितना आज़ाद है किससे आज़ाद है?

क्या हम सच में आजाद है ?
अगर हां तो कितना आजाद है
किससे आजाद है ?

एक आम व्यक्ति के दिमाग में इस तरह के सवाल आना कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि हिंदुस्तान जहां एक तरफ विकास के नए पैमानों को तय करने में व्यस्त है वही बार-बार हमारे दिमाग में एक बात कुतुहल वश आती है और वह यह आती है कि क्या हम सच में आजाद हैं क्योंकि इस पर संदेह करने के पीछे का जो मुख्य कारण है वह यह है कि 75 वर्षों की आजादी के बाद भी शिक्षा, भुखमरी और गरीबी, बेरोजगारी, स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही व अन्य बहुत सारे संवैधानिक मुद्दे हैं जिन मुद्दों का समाधान पिछले 75 वर्षों में ना कोई सरकार कर पाई है और ना वर्तमान में कोई राजनीतिक हुक्मरान इसका समाधान करने की जुगत में है उन परिस्थितियों में जहां देश के विकास को राजनीति के चश्मे से देखा जाता है देश की जनता के भले या बुरे को राजनीतिक पार्टियां अपने हित और अहित की दृष्टि से देखती हो कितना फायदा जनता को कब करवाना है यह राजनीतिक पार्टियां अपने हित के लिए तय करती हो वहां पर मन में एक सवाल उठता है और वह यह उठता है कि क्या हम सच में आजाद हैं ? शिक्षा का स्तर आपको पता ही है देश में, आज भी हिंदुस्तान में 3.50 करोड़ बच्चे ऐसे है जिन्होंने स्कूल का मुंह नहीं देखा जबकि अगस्त 2009 में शिक्षा का अधिकार जैसे कानून लोकतंत्र के पवित्र मंदिर संसद से लागू हो चुका है बावजूद इसके शिक्षा का ये हाल है जहां हिंदुस्तान में शिक्षा से मुनाफा कमाना कानूनी अपराध है 2 मई 2016 में सर्वोच्च न्यायालय ने अपने आदेश में कहा है कि कोई भी संस्थान, व्यक्ति शिक्षा को व्यापार बनाकर मुनाफा कमाता है तो ये गैरकानूनी है कानूनी अपराध है जिसकी सजा होनी चाहिए फिर भी देश में 14.94 लाख स्कूल धड़ले से शिक्षा से मुनाफा कमा रहे है जबकि करीबन 4 लाख स्कूल पंजीकृत भी नही है 1978 में जहां 74.10 बच्चे सरकारी स्कूल जाते थे वो आंकड़ा अब 50 प्रतिशत के अंदर आ गया है और काफी सरकारी स्कूल बंद होने की कगार पर है आज हिंदुस्तान को शिक्षा अधिनियम कानून (एजुकेशन रेगुलेटरी एक्ट) लागू करने की पूर्ण अवश्यकता है अब भुखमरी और गरीबी को ही ले लो, आज हमारे देश में 28त्न लोग ऐसे है जिनको दो समय का भोजन भी ढंग से उपलब्ध नहीं हो पाता, ऐसे लोग है जिनके पास सिर ढकने की जगह नही है इंसान की गरीबी उसकी सफलता के बाद पता चलती, जिस तरह से ओलंपिक में मेडल जीतकर आने के बाद उस खिलाड़ी की गरीबी की गाथा गाई जाती है बल्कि उससे पहले इस तरह के ना जाने सैंकड़ों हजारों खिलाड़ियों की जरूरतों का किसी को अंदाजा भी ना हो.

जातिगत आरक्षण के नाम पर बिना जरूरत सरकारी सुविधाओं को ठूसने का कार्य केवल राजनीतिक हित द्वारा राजनीतिक दलों द्वारा किया जा रहा है जबकि जरूरतमंदों तक सरकारी सुविधाओं का पहुंचना अपने आप में बहुत बड़ा चैलेंज है इस व्यवस्था पर एक आम आदमी के मन में यह बात आती है कि आखिर किस की आजादी है और कितनी आजादी है और क्या वाकई में हम आजाद हुए हैं क्योंकि मानवाधिकार की बात करने वाले लोग प्रतिदिन मानव के अधिकारों का हनन कर रहे हैं उसी प्रकार समानता की बात करने वाले लोग लगातार जातियों के नाम पर वोट बैंक के नाम पर भेदभाव करते नजर आ रहे हैं यह कहीं ना कहीं गुलामी का प्रतीक है जिसमें इस तरह के कृत्य होते हुए देखने के बावजूद भी कोई आवाज नहीं उठा रहा है यह दुर्दशा है सोचने का विषय है कि अगर यही स्थिति रहती है तो हिंदुस्तान के भावी भविष्य की गर्त में छिपा हुआ युवा पीढ़ी का भविष्य किस कदर होगा इसका अंदाजा लगाना बहुत मुश्किल है

खैर पूरा देश स्वतंत्रता दिवस को मना रहा है गाथाएं वीर पुरुषों की गाई जाएगी और कुछ आगे के सपने आम लोगों को दिखाए जाएंगे उन सभी को स्वीकार करते हुए अन्य लोगों की तरह हम भी स्वतंत्रता दिवस के उत्सव में शामिल होते हुए आप सब को स्वतंत्रता दिवस की बहुत बहुत शुभकामनाएं देते हैं और उम्मीद करते हैं कि एक दिन फिर हिंदुस्तान विकास की परिपाटी पर तेज गति से दौड़ता नजर आएगा ।

सम्पत सारस्वत
'बामनवाली'
राष्ट्रीय समीक्षक
प्रसार भारती दिल्ली

हिलव्यू समाचार

hillviewsamachar@gmail.com

04

जयपुर >> शनिवार, 28 अगस्त, 2021

मुख्यमंत्री कोरोना सहायता योजना

केन्द्रीकृत भुगतान पोर्टल का शुभारम्भ किया

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा कोरोना वैश्विक महामारी से अनाथ हुए बच्चों, विधवा महिलाओं एवं उनके बच्चों को आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक संबल प्रदान करने हेतु मुख्यमंत्री कोरोना सहायता योजना लागू की गई है।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के शासन सचिव, डॉ0 समित शर्मा,ने बताया कि योजना के त्वरित एवं पारदर्शी क्रियान्वयन के लिए बुधवार को योजना के तहत देय सहायता राशि का भुगतान ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से सीधे ही लाभार्थियों के बैंक खाते में करने हेतु केन्द्रीकृत भुगतान पोर्टल का शुभारंभ किया गया है। डॉ. समित शर्मा ने बताया कि अब तक कोरोना महामारी से चिन्हित अनाथ बच्चों, विधवा महिलाओं एवं उनके बच्चों को जिला कलक्टर के स्तर पर ऑफलाइन स्वीकृति जारी कर देय सहायता राशि का भुगतान सीधे ही किया जा रहा था। अब विभाग द्वारा ?से पीडित बच्चों एवं विधवा महिलाओं को त्वरित स्वीकृति एवं सीधे ही उनके बैंक खाते के माध्यम से नियमित भुगतान करने हेतु मुख्यमंत्री कोरोना सहायता पोर्टल अथक प्रयासों से विकसित किया गया है।

उन्होंने बताया कि अब विभाग द्वारा ऑफलाइन भुगतान किये गये समस्त लाभार्थियों को पोर्टल पर फीडकर मुख्यमंत्री सहायता कोष से प्राप्त राशि का ऑनलाइन प्रक्रिया से एकमुश्त एवं मासिक देय सहायता राशि का निरन्तर निदेशालय स्तर से राजस्थान पेमेंट प्लेटफार्म (आरपीपी) के माध्यम से केन्द्रीकृत भुगतान समय पर किया जायेगा, इससे सभी लाभार्थियों को नियमित रूप से राशि उनके बैंक खातों में प्रतिमाह प्राप्त हो सकेगी। राशि खाते में जाते ही संबंधित लाभार्थी के मोबाइल पर राशि हस्तांतरित होने का एसएमएस भी पोर्टल द्वारा भेजा जाएगा।

श्री राजीव गांधी की दूरदर्शिता से भारत बना सूचना तकनीक का सिरमौरः मुख्यमंत्री

राजीव-2021 कार्यक्रम

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि भारत में सूचना क्रांति के जनक पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी की दूरदर्शिता का ही परिणाम है कि आज भारत सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पूरी दुनिया का सिरमौर बना हुआ है। शासन, प्रशासन और जीवन के हर क्षेत्र में सूचना तकनीक का स्थान कायम हुआ है। ई-गवर्नेन्स के माध्यम से लोगों का जीवन आसान हुआ है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार संवेदनशील, पारदर्शी और जबावदेह सुशासन के लिए प्रदेश में सूचना तकनीक का अधिकाधिक उपयोग पूरी प्रतिबद्धता के साथ सुनिश्चित कर रही है। गहलोत शुक्रवार को पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी के 77वें जन्मदिवस के अवसर पर वर्चुअल माध्यम से आयोजित राजस्थान इनोवेशन विजन (राजीव-2021) कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। 'सूचना तकनीक से सुशासन' थीम पर आयोजित इस कार्यक्रम में उन्होंने राज किसान साथी पोर्टल, आई-स्टार्ट वर्चुअल इन्क्यूबेशन प्रोग्राम और राजीव गांधी आईटी क्विजथॉन का भी शुभारंभ किया। साथ ही, राजीव/75 फंड के तहत 21 चयनित स्टार्ट-अप्स को 2 करोड़ रूपए के फंड का वितरण किया गया।

प्रदेश में 85 हजार ई-मित्र केंद्रों से साकार हो रहा सुशासन का संकल्पः मुख्यमंत्री ने कहा कि स्व. राजीव गांधी ने बेहद विकट परिस्थितियों के बावजूद देश को तकनीकी क्षेत्र में नई दिशा दी। उन्होंने इनोवेशन को प्राथमिकता देकर संचार क्रांति का आगाज किया। उनकी दूरदर्शी सोच और मंशा को अंगीकार करते हुए राजस्थान ने भी आईटी के क्षेत्र में तेजी से कदम आगे बढ़ाए हैं। पारदर्शी और जबावदेह सुशासन के रूप में प्रदेशवासियों को इसका भरपूर लाभ मिल रहा है। राजस्थान में करीब 85 हजार ई-मित्र केंद्र संचालित हैं। अब एक हजार से अधिक जनसंख्या वाले राजस्व गांवों में भी इनकी स्थापना की जा रही है। राज्य के सात हजार पाँच सौ तेरह राजस्व गांवों में नए ई-मित्र खोले गए हैं और 33 जिलों, तीन सौ अट्ठाइस तहसीलों तथा एक सौ इकत्तर उप-तहसीलों में ई-मित्र प्लस मशीनें स्थापित की गई हैं।

ई-गवर्नेन्स में राजस्थान देश का अग्रणी राज्यः गहलोत ने कहा कि ई-गवर्नेन्स को बढ़ावा देने की दृष्टि से ही हमारी सरकार के पिछले कार्यकाल में भारत निर्माण राजीव गांधी सेवा केंद्रों की स्थापना की गई थी। आज इन केंद्रों पर विभिन्न विभागों की करीब चार सौ पचहत्तर सेवाएं ऑनलाइन प्रदान की जा रही हैं। संपर्क पोर्टल के माध्यम से शिकायतों का शीघ्र निराकरण और पारदर्शी मॉनिटरिंग की जा रही है। ऑनलाइन माध्यम से सरकारी कामकाज, भुगतान, हैल्थ रिकॉर्ड एवं रेवेन्यू रिकॉर्ड के डिजिटलाइजेशन, छात्रवृत्ति वितरण आदि में राजस्थान देश का अग्रणी राज्य है। करीब 80 लाख परिवारों को पेंशन का ऑनलाइन भुगतान किया जा रहा है। जन सूचना पोर्टल के माध्यम से 73 विभागों की चार सौ बत्तीस तरह की सूचनाएं आमजन के लिए उपलब्ध कराई गई हैं। उच्च स्तरीय स्टेट डाटा सेंटर के माध्यम से आईटी आधारित सेवाओं को बढ़ावा दिया जा रहा है।

ग्रामीण क्षेत्रों तक करेंगे स्टार्ट-अप का विस्तारः गहलोत ने कहा कि प्रदेश के युवाओं को अंतर्राष्ट्रीय प्लेटफॉर्म पर लाने के लिए स्टार्ट-अप्स को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है। शहरों के साथ-साथ अब ग्रामीण क्षेत्रों तक इनका विस्तार करने का प्रयास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि तकनीकी शिक्षा को अधिक रोजगारोन्मुखी बनाने के लिए जोधपुर में करीब चार सौ करोड़ रूपए की लागत से फिनटेक यूनिवर्सिटी की स्थापना की जा रही है। उन्होंने इसका नाम पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी के नाम पर करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि जयपुर में करीब दौ सौ करोड़ रुपए की लागत से राजीव गांधी सेंटर ऑफ एडवांस टेक्नोलॉजी की स्थापना भी की जा रही है। इसके माध्यम से युवाओं को सूचना तकनीक के नवीनतम पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने का अवसर मिलेगा।

200 मेधावी विद्यार्थियों के लिए राजीव गांधी स्कॉलरशिप फॉर एकेडमिक एक्सीलेंस की घोषणाः मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम में स्टार्ट-अप के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करने वाले युवाओं को 'राजीव गांधी इनोवेशन अवार्ड' देने की घोषणा की। इसके तहत प्रथम पुरस्कार के रुप में 2 करोड़ रुपए, द्वितीय पुरस्कार के रूप में 1 करोड़ रुपए तथा तृतीय पुरस्कार के रूप में पचास लाख रुपए की राशि प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में 14 नवंबर से 'राजीव गांधी युवा कोर' का शुभारंभ भी किया जाएगा। साथ ही, प्रदेश के दौ सौ मेधावी विद्यार्थियों को देश-विदेश के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में अध्ययन के लिए उन्होंने 'राजीव गांधी स्कॉलरशिप फॉर एकेडमिक एक्सीलेंस' की घोषणा की।

इस योजना पर प्रतिवर्ष करीब सौ करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे, जिसमें विद्यार्थी के अध्ययन का पूरा खर्च राज्य सरकार वहन करेगी।

लोकतंत्र की मजबूती के लिए पूर्व प्रधानमंत्री स्व.गांधी ने उठाए साहसिक कदमः गहलोत ने कहा कि देश को तेजी से आगे बढ़ाने और आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने के लिए पेयजल, टीकाकरण, साक्षरता, टेलीकॉम, खाद्य तेल और डेयरी के लिए 6 तकनीकी मिशन शुरू किए। उन्होंने 18 वर्ष की आयु के युवाओं को मताधिकार दिया और 73वें तथा 74वें संविधान संशोधन के माध्यम से पंचायत एवं नगरीय निकायों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने की पहल की। उन्होंने देश की एकता और अखंडता के साथ ही लोकतंत्र की मजबूती के लिए अपनी जान की परवाह किए बगैर साहसिक कदम उठाए।

श्री राजीव गांधी दूरदर्शी और वैज्ञानिक सोच के थे पक्षधरःश्री सैम पित्रोदाः पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी के इनोवेशन सलाहकार रहे श्री सैम पित्रोदा ने कहा कि स्व. गांधी एक दूरदर्शी नेता थे। वे तार्किक ज्ञान और वैज्ञानिक सोच के पक्षधर थे। उन्होंने देश को 21वीं सदी में ले जाने की तैयारी करने के लिए अलग-अलग सेक्टर के विशेषज्ञ लोगों के साथ मिलकर कई विकास योजनाएं बनाईं और उन्हें लागू किया। पूर्व प्रधानमंत्री ने विकास के लिए नई तकनीक के इस्तेमाल पर फोकस किया। इस क्रम में उन्होंने देश के समक्ष उपस्थित गंभीर चुनौतियों के मुकाबले के लिए 6 मिशन शुरू किए।

पित्रोदा ने कहा कि स्व. राजीव गांधी के प्रयासों से ही देश आज पोलियो से मुक्त हो पाया है। उन्होंने खाद्य तेल और दुग्ध उत्पादन में भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए गंभीर प्रयास किए। स्व. गांधी के कार्यकाल में सी-डॉट, सी-डैक, एनआईसी जैसी प्रतिष्ठित आईटी संस्थाओं की स्थापना हुई, जिनके माध्यम से देश के युवा सॉफ्टवेयर डवलपमेंट, एडवांस कम्प्यूटिंग और नेटवर्किंग आदि क्षेत्रों में दुनियाभर में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं। राजस्थान सरकार द्वारा सुशासन के लिए आईटी के उपयोग की सराहना करते हुए पित्रोदा ने कहा कि इन कदमों से स्व. गांधी की नए भारत की परिकल्पना को मूर्तरूप मिलेगा। उन्होंने कहा कि जन सेवाओं को सुगम और पारदर्शी बनाने में आईटी का और बेहतर उपयोग किया जाना चाहिए।

पौधारोपण से आने वाली पीढ़ी को मिलेगा स्वच्छ एवं स्वस्थ पर्यावरण का तोहफाः सोनी

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के महानिदेशक श्री बी एल सोनी ने कहा कि पे? हमारे जीवन का मूल आधार है। यह हमारी प्राकृतिक धरोहर है , जिसे हम आज लगाएंगे तो आने वाली पी?यों के लिए स्वच्छ एवं स्वस्थ पर्यावरण का तोहफा देकर जाएंगे।

सोनी बुधवार को एसीबी मुख्यालय में आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर संबोधित करते हुए कहा कि कोरोना महामारी के चलते वर्तमान समय में पर्यावरण को लेकर आमजन में जागरूकता आई है। इस समय समाज में पर्यावरण के प्रति सकारात्मक एवं संरक्षण की सोच को बल मिला है जिससे प्रकृति को पुनः फलने फूलने का लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि प्रदूषण को रोकने के लिए पौधारोपण से अच्छा कोई उपाय नहीं है , इसलिए हमें ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाने चाहिए और

पौधारोपण के साथ साथ पे?ो एवं वनों के संरक्षण की ओर भी ध्यान देना चाहिए।

उन्होंने आह्वान किया कि तापमान में हो रही निरंतर वृद्धि और जलवायु परिवर्तन से होने वाले दुष्प्रभाव से बचने के लिए हर व्यक्ति को कम से कम एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए। उन्होंने इस अवसर पर विभिन्न औषधीय पौधों के गुणों एवं महत्व के बारे में बताते हुए इनके सेवन से शरीर में ब?ने वाली प्रतिरोधक क्षमता तथा लाभ के बारे में भी बताया।

इस अवसर पर परिसर में नीम,तुलसी, गिलोय, अश्वगंधा, अशोका, कैशिआ श्यामा, मोलाक्षी, चंपा,आदि पर्यावरण अनुकूलित, औषधीय एवं छायादार पौधे रोपित किए। कार्यक्रम में अतिरिक्त महानिदेशक श्री दिनेश एमएन, पुलिस अधीक्षक श्री योगेश दाधीच, एसीबी के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी सहित मीडिया कर्मियों ने भी उत्साह से भाग लिया एवं पौधे रोपित किए।

परिवहन विभाग, राजस्थान द्वारा शुरू की गई ऑनलाइन लर्नर लाइसेंस की सुविधा

अब घर से भी बना सकते हैं लर्नर लाइसेंस

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। प्रदेशवासियों को अब लर्नर लाइसेंस बनाने के लिए परिवहन कार्यालय नहीं जाना प?ेगा। अब घर से भी मोबाइल, लैपटॉप या डेस्कटॉप के जरिए लाइसेंस के लिए ऑनलाइन आवेदन करने के साथ-साथ टेस्ट देने की सुविधा भी मिलेगी। साथ ही टेस्ट में पास होते ही लाइसेंस सर्टिफिकेट भी डाउनलोड किया जा सकेगा। हालांकि लर्नर लाइसेंस के लिए ऑनलाइन आवेदन कर टेस्ट देने की सुविधा पूर्व के अनुसार परिवहन कार्यालय में भी यथावत रहेगी। परिवहन मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास ने बताया कि विभाग द्वारा गुरूवार से यह सुविधा शुरू कर दी गई है। इस सुविधा से आवेदकों कतार में नहीं लगना प?ेगा, और समय की बचत भी होगी। एक लाइसेंस बनाने में लगभग 20 मिनट का समय लगेगा। हालांकि लर्नर के बाद स्थाई लाइसेंस के लिए नजदीकी परिवहन कार्यालय जाना पड़ेगा। खाचरियावास ने बताया कि इस सेवा के ऑनलाइन होने के बाद आवेदक घर बैठे किसी भी समय लर्नर लाइसेंस के लिए ऑनलाइन टेस्ट दे सकता है। टेस्ट में पास होने के बाद प्रिंटर के जरिए ।4 साइज पेपर पर लाइसेंस का प्रिंट निकाल सकता हैं।

आधार (ई-केवाईसी) प्रमाणीकरण का विकल्प चुनने पर ऐसे करे आवेदन

1- ई-केवाईसी प्रक्रिया में आधार नंबर दर्ज करने पर आधार से लिंक मोबाइल नंबर पर वन टाइम पासवर्ड (ओटीपी) आयेगा। ओटीपी दर्ज से सत्यापन करने के बाद आधारकार्ड में अंकित नाम, जन्मतिथि, घर का पता और अन्य जानकारी स्वतः ही आवेदन में भर जायेगी। इसके बाद लर्नर लाइसेंस की फीस जमा कराने की विकल्प मिलेगा। फीस जमा होने के बाद 12 मिनट का एक वीडियो देखना होगा। इसमें यातायात नियमों की पालना संबंधित जानकारी होगी। इसके पूरा होने के बाद मोबाइल पर मैसेज के जरिए आवेदन नंबर और पासवर्ड प्राप्त होगा, उससे ही ऑनलाइन टेस्ट दिया जा सकेगा। इस टेस्ट में 20 प्रश्न होंगे, जिनमें से 12 सही करने पर ही पास होंगे। ये 20 प्रश्न हर आवेदकों के पास अलग-अलग आयेंगे। इसके बाद आवेदक ओटीपी के जरिए लर्नर लाइसेंस डाउनलोड कर सकते हैं। ई-केवाईसी का विकल्प तभी चुने, जब कि आधार में दर्ज सभी जानकारी सहीं हो।

2- आधारकार्ड में दर्ज जानकारी (जन्मतिथि व पता) के अनुसार आवेदन नहीं करने की स्थिति में आवेदक को जन्मतिथि, घर का पता आदि के साक्ष्य अपलोड करने होंगे। इसके बाद परिवहन कार्यालयों में संबंधित कर्मचारी आवेदन में अपलोड किये गए दस्तावेज साक्ष्य के रूप में मान्य होने पर, आवेदन में अंकित सूचनाओं से मिलान करेगा। आवेदन नियमानुसार होने पर आवेदक टेस्ट दे सकेगा। दोनों ही विकल्प में आवेदक की फोटो आधार से ही ली जायेगी।

फोर्टिस हॉस्पिटल के सीनियर फिजिशयन एंड क्रिटिकल केयर एक्सपर्ट डॉ. पंकज आनंद ने बताया

गंभीर कोविड से उबरने के बाद बढ़ा सेकेंड्री इंफेक्शन का खतरा

सेकेंड्री इंफेक्शन में मरीज को आ रहे निमोनिया, यूरिनरी ट्रैक्ट इंफेक्शन, बुखार से जुड़े लक्षण

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। कोरोना की दूसरी लहर में जो मरीज गंभीर रूप से संक्रमित हुए थे और लंबे समय तक अस्पताल में भर्ती रहे, उनके ठीक होने के बाद अब उन्हें सेकेंड्री इंफेक्शन होने का खतरा कहीं अधिक बढ़ गया है। सेकेंड्री इंफेक्शन के कारण कई मरीज वापस हॉस्पिटल्स में भर्ती हो रहे हैं। ऐसे मरीजों में निमोनिया यूरिनरी ट्रैक्ट में इंफेक्शन, लो बीपी, किडनी में खराबी, तेज बुखार समेत कई लक्षण सामने आ रहे हैं। लक्षण नजरअंदाज करने पर या इसका

देरी से इलाज शुरू कराने पर यह मरीज के लिए गंभीर हो सकता है।

कोविड और स्टेरॉयड के कारण कमजोर हुई इम्यूनिटी से हो रही समस्या

फोर्टिस हॉस्पिटल के सीनियर फिजिशयन एंड क्रिटिकल केयर एक्सपर्ट डॉ. पंकज आनंद ने बताया कि ब्लैक फंगस भी इन्हीं सेकेंड्री इंफेक्शन में शामिल था लेकिन कोरोना की लहर के साथ यह इंफेक्शन भी खत्म हो गया है। कोरोना संक्रमण और उसके इलाज में इस्तेमाल होने वाले स्टेरॉयड के कारण मरीज की इम्यूनिटी कमजोर हुई है। ऐसे मरीजों को बैक्टेरियल इंफेक्शन जिसे सेप्सिस भी कहा जाता है, इसकी शिकायत हो रही है। इसमें बैक्टेरिया की वजह से मरीज को निमोनिया हो जाता है, पेशाब कम आने लगता है, गुर्दे में खराबी होने लगती है, मसल्स में दर्द होने लगता है। कई मरीजों में स्टेरॉयड के कारण डायबिटीज भी विकसित हो गई है।

निमोनिया का वैक्सीन लगवाएं, लक्षणो पर नजर रखें

इसके बचाव के लिए मरीज निमोनिया का वैक्सीन लगवा सकते हैं जिससे बीमारी अधिक न बढ़ पाए। ऐसे मरीजों को हेल्दी डाइट, नियमित फिजिकल एक्टीविटी, डायबिटीज पर कंट्रोल और बाहर खुले में जाने से बचना चाहिए। डॉ. पंकज ने बताया कि अगर मरीज को बुखार, तेज सर्दी लगना, बार-बार पेशाब आना या पेशाब करते वक्त जलन होना, खांसी आना, चक्कर या बेहोशी आने जैसे लक्षण दिखें तो उसे तुरंत डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए।

जयपुर में यकृत, अग्नाशय एवं पित्त की थैली की सर्जरी की मिलेगी सुविधा

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। जयपुर में अब यकृत, अग्नाशय तथा पित्त की थैली की सर्जरी की सुविधा उपलब्ध हो सकेगी। राज्य सरकार ने संवेदनशील निर्णय करते हुए जयपुर स्थित एसएमएस मेडिकल कॉलेज में हेपाटो पैंक्रियाटो बिलरी सर्जरी विभाग की स्थापना के लिए प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान कर दी है। चिकित्सा शिक्षा विभाग के जारी आदेश के अनुसार मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने वित्तीय वर्ष 2021-22 के बजट में हेपाटो पैंक्रियाटो बिलरी सर्जरी विभाग की स्थापना की घोषणा की थी। बजट घोषणा की क्रियान्वति में ही एसएमएस मेडिकल कॉलेज में इम्यूनोलॉजी एवं रुमेटोलॉजी विभाग, यूरोलॉजी विभाग तथा यूरो ऑन्कोलॉजी विभाग की स्थापना हेतु 10 नवीन पदों के सृजन की स्वीकृति भी दी गई है। उपरोक्त 10 पदों में से इम्यूनोलॉजी एवं रुमेटोलॉजी विभाग में एक आचार्य तथा एक सह आचार्य का पद सृजित किया गया है।

पीडियाट्रिक यूरोलॉजी में कुल 4 पद बनाए गए हैं जिनमें एक आचार्य, एक सह आचार्य तथा 2 सहायक आचार्य के पद हैं। इसी तरह, यूरो ऑन्कोलॉजी में एक आचार्य, एक सह आचार्य तथा 2 सहायक आचार्य के कुल 4 पद हैं। उक्त पदों के सृजन से गठिया रोग, बच्चों में यूरीनरी संबंधी रोग तथा यूरीनरी कैंसर रोगियों को चिकित्सा की अधिक सुविधा मिल सकेगी।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक **रिज़वान एजाज़ी के लिए** अम्बर ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर में मुद्रित एवं महिमा क्लासिक 601, बी-84, रमन मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
संपादक : शालिनी श्रीवास्तव, फोन : 0141-2620340 मो.: 9460678701, 7976561127 (21 जून 2014 से निरन्तर प्रकाशित) **hillviewsamachar@gmail.com**